एक महत्त्वपूर्ण निर्णय

जो आप लेनेवाले है

मसीह का स्वीकार करने का मतलब क्या है यह समझ लेना।

जॉयस मायर

न्यू यॉर्क टाईम्स की बहुविक्रीत पुस्तकों की चार्ट में #1 की लेखिका

एक महत्त्वपूर्ण निर्णय जो आप लेनेवाले है

नया जन्म पानेका मतलब क्या है
यह संपूर्ण रूप से जान लेना

जॉयस मायर

एक महत्त्वपूर्ण
निर्णय जो आप
लेनेवाले है

विषय सूचि

1.	एक महत्त्वपूणं निर्णय जो आप लेनेवाले है	5
2.	क्या आपका नया जन्म हुआ है?	7
3.	यीशु कौन है?	11
4.	क्या आप विश्वास कर सकते है?	23
5.	अब जब मेरा नया जन्म हो चुका है तो अब मैं क्या करू?	29
6.	क्या और कुछ बाकी है?	33

१

एक महत्त्वपूर्ण निर्णय जो आप लेनेवाले है

आज एक बहुतही महत्त्वपूर्ण निर्णय के विषय में आपसे बात करना चाहूँगी। सही मायने मे देखा जाए तो यह वह सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय है जो आपको आपके जिंदगी में लेना ही होगा। आप कौन से पाठशाला में जाएंगे, कौनसे करियर का चुनाव करेंगे, किस के साथ शादी करेंगे या फिर कहाँ पर रहेंगे इन सभी प्रश्नों के निर्णयों में यह निर्णय आपके लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह निर्णय सार्वकालिक जीवन के बारे है, इसीलिए इसके बारे में जरूर विचार कीजिए।

अनेक लोग सिर्फ उनके आनेवाले आज या कल के बारे मैं सोचते है, कुछ लोग आनेवाले महीनों के बारे में सोचते है, तो कुछ लोक उनके रिटायरमेंट के बाद की जिंदगी के बारे में सोचते है। पर आज में आपसे आपके मृत्यू पश्चात के जीवन के विषय मैं चर्चा करना चाहूँगी। क्या आपने उसके लिये कोई योजना की है?

क्या आपको यह पता है, की आपका शरीर सिर्फ मांस हड्डियाँ, और खूनसे बना हुआ है? पर सच यह भी है की आप आत्मा हो, जिसमें जान है और जो शरीर मे रहती है। जब आपकी मृत्यू हो जाती है, तो कुछ समय बाद आपके शरीर को कफन में डाला जाता है, और वापस कुछ समय के बाद उसका रुपांतर मिट्टी या राख में हो जाता है। यह तो आपके शरीर का हुआ, पर जो आप सच में हो उसका क्या?

आपका आत्मिक जीवन है, वह आपके प्राकृतिक या शारीरिक आँखों से नही दिखता, पर आत्मिक रुप से आपका आत्मा ही हमेशा जीवित रहता है। और आपका यहअनंतकालिक आत्मिक जीवन आप कहाँ पे व्यतीत करते है, यह इस पुस्तक को पढ़ते हुये कौन सा निर्णय लेते है उस पर निर्भर करता है।

इस दुनिया में अच्छा और बुरा, सही और गलत ऐसी दो शक्तियाँ है। और किसके बतायें बगैर ही हमें यह अपने अंदर समझ में आता है। इस आत्मिक क्षेत्र में दो ताकते है - परमेश्वर और शैतान; अच्छे दूत जो उसकी इच्छा और कार्य करने हेतु बनाये गये है - और बुरे दूत - जिसे दुष्टात्मा भी कहा जाता है।

यह बुरे दूत पहले अच्छे दूत थे, मगर फिर उन्होने परमेश्वर के विरुद्ध में जाने का निर्णय लिया। लुसिफर (जिसे बलजबूल या शैतान भी कहा जाता है) ने इस दूतों का परमेश्वर के विरुद्ध जाने में नेतृत्व किया, पर परमेश्वर ने इन सभीकों स्वर्ग से निकाल दिया और उनके लिये जो जगह बनाइ जिसे नरक कहते है उसमें उन्हें डाल दिया (देखिए प्रकाशितवाक्य १२:७-९)। परमेश्वर और उसके अच्छे दूत इनका घर स्वर्ग में है, पर शैतान और उसके दूतों का घर नरक में है।

स्वर्ग और नरक के बीच में यह पृथ्वी और उसका वातावरण है। पृथ्वी और उसके इस वातावरण में अच्छे और बुरे दूत हमेशा मँडराते रहते है। बाइबल हमें १ पतरस ५:८ में बताता है की सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किसको पकड़कर फाड खाए। इसी तरह परमेश्वर के लोगों की (जिन्हो ने उसकी सेवा करने का निर्णय लिया है उनकी) इस विरोधी शैतान से रक्षा करने का, हमेशा उनके साथ रहने का जो काम परमेश्वर द्वारा दिया गया है, वह करने के लिये पवित्र आत्मा भी हमेशा मँडराता रहता है। इसी तरह ऐसे लोक जिन्होंने अभीतक परमेश्वर और उसके मार्गों को नही अपनाया ऐसे लोगों को परमेश्वर के लिए जितने और प्राप्त करने का काम भी पवित्र आत्मा करता है।

तो क्या आपने आपका चुनाव किया है? आपके जीवन के लिए निर्णय लेना या चुनाव करना यह सिर्फ आपके हाथ में है, कोई दुसरा व्यक्ती आपके लिए वह नही कर सकता। परमेश्वर ने आपको स्वतंत्र रुप से और स्वतंत्र इच्छाशक्ति से निर्माण किया है, इसीलिए आप उसका स्वीकार करे ऐसी ज़बरदस्ती वह आपसे कभी नही करेगा। उसने अपने दूतों पर भी कभी जबरदस्ती नही की, जब कुछ दूतोंने उसके विरूद्ध विद्रोह किया तो भी उसने उनसे कोई जबरदस्ती नही की; उन्हें उनकी मर्जी से जाने की स्वतंत्रता दि। पर यह याद रखीए की, उन्होने खुद अपने गलत निर्णय के द्वारा अपने आप पर दंड ओढ लिया।

२

क्या आपका नया जन्म हुआ है?

क्या आपका नया जन्मा हुआ है? नया जन्म होने का मतलब क्या है? नये जन्म के विषय में बाइबिल क्या कहता है? यूहन्ना ३:३ में यीशु ने कहा :

''मैं तुझ से सच - सच कहता हूँ, यदि कोई मनुष्य नये सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर का राज्य देख नही सकता।''

नीकुदेमुस नाम के जिस मनुष्य के साथ यीशु बोल रहा था उसके कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया तब कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? (यूहन्ना ३:४)। शायद आप भी यही सोच रहो होंगे, की जिस मनुष्य का जन्म एक बार हो चुका है, उसका जन्म वापस कैसे हो सकता है? पर मुझे यह स्पष्ट करने दो, की यहा पर यीशु शारीरिक जन्म के विषय में नही तो आत्मिक जीवन के विषय में बता रहा है। जैसे की पहले ही मैंने आपको बताया है, की आप आत्मा हो, आपमें जान है, और आप शरीर में रहते है, पर बाइबिल हमें यह बताता है, की पाप के कारण हमारी आत्मा और जान मृत हो गये है।

आप आइने में आपने आपको (आपके शरीर को) देख सकते हो, आप श्वास ले सकते है। आप यह कस सकते है, की में जीवित हूँ। पर क्या जिसे आप जीवित कह हरे है, वह सच में आप जीवित है? क्या आप जीवितों हे, और आपकी अंतरात्मा संपूर्ण रुप से प्रकाशित है? क्या आपके जीवन में शांति है? क्या आप अपने आप से खुश है? क्या आप अपने आप को पसंद करते है? क्या आप मृत्यू सें घबराते है? यह सभी प्रश्न आप अपने आपसे पूछना जरूरी है। आप आपके चेहरे पर हँसी ला सकते है, पर आपके अंतरात्मा में नही।

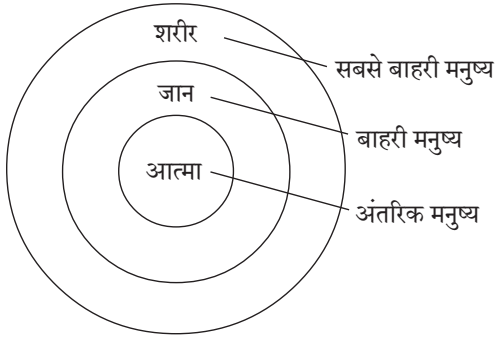

शरीर, जान और आत्मा

जब यीशु नये जन्म के विषय में बोल रहा था, तब वह यह सिखा रहा था की, परमेश्वर के प्राप्त होने के लिए आपका अंतरिक मनुष्य जीवित होना जरूरी है। यूहन्ना ३:६ बताता है की, जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।

जब माताएँ बच्चों को जन्म देती है, तब वे शरीर से जन्मे शरीर है। पर जब पवित्र आत्मा आपके मानवी आत्मा में आता है तब, आपका आत्मा द्वारा आत्मिक जन्म होता है। इसी को नया जन्म कहा जाता है। सिर्फ एक ही तरीके से पवित्र आत्मा आपके आत्मा में आ सकता है। जिस प्रकार हमारा शारीरिक जन्म एक ही प्रकार से होता है, वैसे ही हमारा आत्मिक जन्म पाने का भी एक ही रास्ता है।

जैसे आपको शारीरिक जन्म प्राप्त करने के लिए, कुदरत के जन्म प्रक्रिया से ही जाना पड़ता है, वैसे ही आप आपका आत्मिक जन्म भी खुद नही प्राप्त कर सकते है।

अगर आपको आत्मिक तरीके से नया जन्म चाहिए तो आपको क्या करना होगा? पहले तो आप यह जान ले की, आपके जीवन के पापों के कारण आप आत्मिक रुप से मृत है। रोमियों २:२३ हमें बताता है क्यों की सबने पाप किया है और वे सब परमेश्वर की महिमा से वंचित हो गये है। इस दुनिया में कोई भी व्यक्ती पाप विरहीत या पवित्र नही है। इसी लिए आप पापी हो यह कबूल करने सें आप कभी न डरे। यूहन्ना १:८ हमें बताता है :

''यहि हम कहे कि हम में कुछ भी पाप नही तो हम अपने आपको धोखा देते है, और हम में सत्य नही।''

वचन ९ बताता है :

''यहि हम अपने पापों को मान ले तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।''

प्रियों, यही सुसमाचार है। इसके अलावा सुसमाचार और कुछ नही। यदि आपको यह मान्य है की, आप पापी हो, तो अब हमने अपने नये जन्म की ओर पहला कदम उठाया है। अपने पाप मान्य करना मतलब अपने जीवन की सत्यता का सामना करना। सत्य का सामना करना बहुत कठिन है। अपने गलतीयों को मान्य करना बहुत क्लेषदायी होता है। शैतान हमेशा आपको धोखे में रखना चाहता है। पर आप हमेशा सत्य का सामना करे ऐसा परमेश्वर चाहता है।

अब दुसरा कदम यह है की, आप आपके पापों को कबूल कर ले। कबूल करना मतलब निर्भयता से सच बोलना।

यदि आप आपके सारे गलत बातों को या पापों को अपने सच्चे दिल से कबूल करे, और उस पाप की खाई से बाहर निकलने की इच्छा रखे तो आपके पापों की क्षमा हो सकती है।

आप आपके यह पाप किसके पास कबूल कर सकते है? आप आपके सब पाप आपके उस स्वर्गीय पिता के पास कबूल कर सकते है। क्यों की आपको आपके पापों से शुद्ध और मुक्त कराने का यही परमेश्वर का सच्चा मार्ग है। अपने पापों को परमेश्वर के पास कबूल करने द्वारा आप उन पापों सो मुक्त होते हो, और आपके जीवन में उस पाप की जगह पापक्षमा ले लेता है। अपने पापों से शुद्ध होना, यह आपके अंतरात्मा में स्नान करने जैसा है।

मैं नौ साल की थी तब मेरा नया जन्म हुआ, और मुझे आज भी याद है उस वक्त मुझे ऐसे लग रहा था मानो, मेरे अंदर से मुझे घिस घिस से साफ शुद्ध किया गया हो। प्रिय मित्रों आप भी अपने अंतरात्मा को इस स्नान टब या शौवर के नीचे स्नान दीजिये। आप आपके शरीर को बाहर से बाहर से तो साफ कर सकते है, परंतु केवल यीशु ही आपको अन्दर से साफ कर सकता है।

३

यीशु कौन है?

मैंने अब कत कुछ जगहों में यीशु का जीकर किया है, पर अब तर यह नही स्पष्ट किया की, यीशु कौन है। अब मैं आपको यीशु के बारे मैं बता दूँ यही बहुत जरूरी है, क्यों की उसके बगैर परमेश्वर के पास जाने का वही सत्य मार्ग है। और यीशु को जाने बगैर नया जन्म होना भी असंभव है।

जैसे की मैंने पहले ही बता दिया है, की आपको सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना है। तो आपके उस महत्त्वपूर्ण निर्णय का हर एक रिश्ता यीशु कौन है, और उसने आपके लिए क्या किया इससे जुड़ा हुआ है। उसको जानने समझने के बाद आप उस पर विश्वास कसे या अपने उसी अंधकार की राह पर चले (यदि आपका नया जन्म न हुआ हो तो) इसका निर्णय लेना काफी आसान हो जाएगा।

अब मै आपको ऐसा कुछ बताने वाली हूँ, जिसे शायद आपका मस्तिष्क न समझ सके परंतु आपका दिल उस पर विश्वास करने की इच्छा करेगा। तो फिर अब उस अद्भुत और सच्ची कहानी को जानने के लिए तैयार हो जाइए, जो हमेशा के लिए आपकी जिंदगी बदल सकती है।

उत्पत्ति के पहले और दुसरे अध्याय में बाइबिल हमें आदि में परमेश्वर ने पहला मनुष्य बनाया और उसे आदम यह नाम दिया यह कहानी बताता है। परमेश्वर ने आदम को मिट्टी से निर्माण किया और उसमें अपने श्वास फुँककर खुदका जीवन और आत्मा डाली, जिसके कारण आदम जीवधारी मनुष्य हो गया। दुसरे शब्दो में स्पष्ट किया जाये, तो परमेश्वर ने अपना श्वास आदम में डालने द्वारा उसे अंतरिक रुप से (आत्मिक रुप से) जिंदा बनाया। परमेश्वर का श्वास मनुष्य मे डाला गया उसके बाद वह जिंदा हो गया। और अब मनुष्य परमेश्वर के जीवन से पूर्ण था।

परमेश्वर ने उस पहले मनुष्य को आदम यह नाम दिया। बाइबिल हमें बताता है की आदम परमेश्वर की समानता मै बनाया गया (उत्पत्ति १:२६)। आदम में ऐसी बाते थी जो परमेश्वर के समान थी। उसमे परमेश्वर का श्वास था। उसमे परमेश्वर था। आदम में कोई पाप नही था। आदम और परमेश्वर एक दुसरे कें संगत में एक हो जाते थे, क्यों की वे एक समान थे।

बाइबिल बताता है, प्रकाश और अंधकार कभी एक नही हो सकते। परमेश्वर और आदम दोनों प्रकाश थे, इसीलिए वे एक हो सकते थे। आदम परमेश्वर में संतुष्ट था।

क्या आप परमेश्वर में संतुष्ट है?

आदाम को भी स्वतंत्र इच्छा शक्ती के साथ बनाया गया था। क्या सही है यह परमेश्वर ने उसे बताया था, साथ ही चुनाव करने की क्षमता भी उसे दि थी। आदम अच्छा था पर उसे हरदम अच्छा रहने के लिए हमेशा परमेश्वर और सही मार्ग को चुनने की आवश्यकता थी।

आदम अकेला था। इसीलिए परमेश्वर को यह अनुमान हुआ की उसे एक सहाय्यक जरूरत है। तब प्रभू ने आदम को भारी नींद में डाल दिया और उसकी एक पसुली निकाली और उसकी संती मांस भर दिया (उप्पत्ति २:२१,२२)। आदम की पसुली से उसने स्त्री बनायी थी, उसे उसने आदमी की सहाय्यक, सहचारी बनाके रखा। यह याद रखिए की, स्त्री को परमेश्वर ने आदम के पैरो के हिस्से से नही बनाइ, की वह उस पर राज कर सके, या सिर या उसके शरीर के दुसरे किसी हिस्से से नही बनाय पर, उसके पसुली - उसके दिल के पास वाले हिस्से से बनाइ ताकी स्त्री जीवन में पुरुष की सहाय्यक, सहचर बने।

अब हमें एक ऐसा जोडा मिला जो, पृथ्वी पर उस सुंदर उद्यान में रहता था जो परमेश्वर ने सिर्फ उनके लिए बनाया था। वे अपने जीवन का आनंद ले यह परमेश्वर की उनके बारे में इच्छा थी, यह बात बिल्कुल निश्चित है।

क्या आप अपनी जिंदगी का आनंद ले रहे है?

वहाँ पर परमेश्वर ने ही बनायी एक ऐसी निर्मिति थी, जो शैतान था। पहले वह स्वर्ग

में स्तुति - आराधना करनेवाला आद्य दूत था, जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के कारण नीचे गिर गया था। वह परमेश्वर का नही तो अपना अधिकार चाहता था। उसने कहा की, मैं अपना सिंहासन परमेश्वर के सिंहासन के उपर लगाऊँगा। इस विद्रोह में जो दूत उसके साथ थे वे भी उसके साथ स्वर्ग से निकाले गये। उनके लिए नरक बनाया गया, लेकिन आज भी शैतान और उसके दुष्ट आत्माओं को पृथ्वी पर उनका कार्य करने की छुट दि गयी है।

परमेश्वर के योजना के अनुसार शैतान और उसके दूतों को नरक डाला जाने वाला है। परंतु मनुष्य निर्णय लेने का, चुनाव करने का स्वतंत्र अधिकार दिया गया है, इसी लिए उन्हें भी आज भी पृथ्वी पर खुला छोड दिया है। चुनाव करने के नियम के अनुसार, चुनाव के लिए एक से अधिक विकल्प होना जरूरी है।

परमेश्वर जीवन, प्रकाश, आनंद, विश्वास, शांति, धार्मिकता, आशा और सभी अच्छी बातें प्रदान करता है। तो शैतान मृत्यू, अंधकार, निराशा, दुःख, सर्वनाश, भय, दहशत और सब बूरी बाते प्रदान करता है।

अब यह लिखते समय ही मुझे यह लग रहा है, की क्यों कोई शैतान और उसके मार्ग को चुनेगा? पर सच्चाई यह है, की बडी संख्या में लोग वही करते है। बहुत लोगों को फँसाया गया। ज्ञान के अभाव के कारण वे गलत रास्ता चुन रहे है। होशे ४:६ हमें बताता है की, मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई। शायद आज तक अच्छा या बुरा निर्णय लेने का ज्ञान आपको नही था। मैं यह इस लिए कह रही हूँ ताकी हज़ारों लोक अच्छा निर्णय लेने में तैयार हो सके।

खैर, अपनी कहानी को आगे बढाते है। आदम और हव्वा (आदम ने उसे यह नाम दिया) उद्यान में अपने जीवन का आनंद ले रहे थे। परमेश्वर ने उन्हें पृथ्वी का अधिकार दिया, और उन्होने क्या करना चाहिए या और क्या नही करना चाहिए यह भी बताया। याद रखिए उनको स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता थी। उनका जीवन आशीषीत हो और उसके लिए उन्हें क्या करना चाहिए यह परमेश्वर उन्हें बताता था, लेकिन उन पर उसने कभी जबरदस्ती नही की।

खाने के लिए परमेश्वर ने उनके लिए कई प्रकार के फल लगाए थे, पर परमेश्वर ने उन्हें भले और बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष था उस वृक्ष का फल कभी न कभी न खाने को कहा था (उप्पत्ति २:१७)। अब आप शायद यह सोचेंगे की परमेश्वर ने वह वृक्ष वहा लगाया ही क्यों

और फिर उसके फल न खाने की आज्ञा भी क्यों दि। याद रखिए चुनाव या निर्णय लेने के नियम के अनुसार आपके सामने एक से अधिक विकल्प होना जरूरी है। परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए उनके सामने न मानने के लिए भी तो कोई दुसरा विकल्प होना जरूरी था।

परमेश्वर उनसे प्रेम और आज्ञापालन चाहता था। आज्ञापालन सही मायने में प्रेम का फल है। उसे वह चाहिए था, लेकिन यदि वे यह प्रेम और आज्ञापालन अपने पूरे दिल और मन से न दे तो उसका क्या फायदा था।

क्या आपको यह अच्छा लगेगा, यदि कोई आपसे इसलिए प्रेम करे क्योंकि उसके सामने कोई दुसरा रास्ता न हो। परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा शक्ती के साथ बनाया, और उसने उसके सामने कुछ महत्त्वपूर्ण रास्ते रखे। आज आप भी उसी परिस्थिती में है, आपके पास भी एक स्वतंत्र इच्छा शक्ती है, और आपको भी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना है।

हमारी कहानी को आगे बढाते है। आदम और हव्वा परमेश्वर के संगती का, उद्यान का, अच्छे अच्छे फलों का, और कई अच्छी अच्छी चीजों का अपने जीवन में आनंद ले रहे थे। उप्पत्ति का ३ अध्याय हमें बताता है की, शैतान सांप के रुप मे हव्वा के सामने प्रकट हुआ। उस वक्त वह सांप (शैतान) से नही घबरायी, मगर शायद आज आप और में शायद घबरा जाएंगे। सांप कोई बुरा प्राणी नही था, पर शैतान हव्वा को उसके द्वारा या उसके रुप में प्रकट हुआ।

सांप के रुप में उसने हव्वा को ऐसे प्रश्न पूछे जिनसे वह सोच में पड गयी की, क्या सच में परमेश्वर ने हमें उस भले और बुरे ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने से मना किया है। (२ कुरिन्थियो १०:४,५) हमें ऐसे कल्पनाओं और उची बातों के बारे में बताता है जो हमें परमेश्वर के सत्य ज्ञान से दूर करता है। सच तो यह है की, परमेश्वर कभी नही चाहता था की मनुष्य कभी पाप या बुरी चीजों के बारे में जाने। पर यह याद रखिए के निर्णय उन्हें लेना था।

परमेश्वर ने आदम से कहा था की, यदि वह उस वृक्ष का फल खाएगा तो वह आवश्य मर जाएगा (उप्पत्ति २:१७)। उसके कहने का मतलब यह था की, वह शारीरिक रूप से नही

तो अंतरिक रुप से - आत्मिक रुप से मर जाएगा। उनके अंदर से प्रकाश निकल जाएगा और वे अंधकार बन जाएंगे।

हाल ही में एक मनुष्य जो भयंकर पापी जीवन जी रहा था उसका ऑपरेशन हुआ। उसने सोचा था की वह मर जाएगा। पर अब वह परमेश्वर के साथ अपने संबंध सुधारना चाहता था। जब डेव्ह और मैं उससे बाते कर रहे थे तो उसने कहा, मैं. ऐसे महसूस कर रहा हूँ जैसे मैं अंदर से मर गया हूँ।

इस पर विचार कीजिए, उस आदमी को नया जीवन चाहिए था, क्योंकि वह डर रहा था की, कही ऑपरेशन टेबुल पर वह मर न जाए (शारीरिक मृत्य)। उस वक्त भी अंतरिक रुप से - आत्मिक रुप से वह अपने जीवन भर मरा हुआ था, और यह बात खुद उसने मुँह से कही थी।

क्या आप जिंदा है या मरे हुये है?

सांप ने हव्वा से झूट कहा। उसने कहा, तुम निश्चय न मरोगे (उप्पत्ति ३:४)। उसने जो कहा वह परमेश्वर के कहने के बिल्कुल विरुद्ध था। इसीलिए वह छुट था। परमेश्वर का वचन सच है। यहा शुरूआत में ही आप शैतान का स्वभाव देख सकते है। वह परमेश्वर के बिल्कुल विरुद्ध है। वह सब जो अच्छा है वह आपको मिले ऐसी परमेश्वर की इच्छा है। पर शैतान आपका विनाश करना चाहता है। और अपनी यह इच्छा वह आज भी वैसे ही पूर्ण करता है जैसे वो उसने हव्वा के साथ की।

शैतान अब भी झुठ बोलकर, फँसाकर और झूठी कल्पनाओं के प्रश्न उपस्थित कर रहा था; जिसके कारण हव्वा उन झूठी कल्पनाओं और झूठी बातों में आ गयी जो परमेश्वर के ज्ञान के खिलाफ थी। अंततः वह शैतान के बातों मे आ गयी और उसने उसकी सलाह मान अपने साथ अपने पती को भी वैसा करने में शामिल किया। परमेश्वर ने जिस वृक्ष का फल खाने को मना किया था उस वृक्ष का फल खाकर उन्होने परमेश्वर की आज्ञा तोड दि। इसका परिणाम वही हुआ जो परमेश्वर ने पहले ही करा था - वे आत्मिक रुप से मर गये।

अगली बार जब परमेश्वर आदम और हव्वा को मिलने उद्यान आया, तब वे उससे छुप गये क्योंकि उन्हें उसका भय लग रहा था।

क्या भय के कारण आप परमेश्वर से छुपते आये है?

जब परमेश्वर को यह पता चला की, वे भयभीत हुए है, उसे यह समझ में आया की, पाप किया है। उन्होने शैतान की झूठी बातों पर विश्वास किया। वे मोहजाल में फँस गये और अब उनके चुनाव - निर्णय का फल वे भुगत रहे थे। भय पाप का फल - अंजाम है।

आपको आपके पसंद का फल मिल सकता है।
पर उसका कुछ अंश आपको कडवा लगेगा यह ध्यान में रखो।

अब परमेश्वर उनके साथ उनके पाप के अनुसार व्यवहार करने लगा। पर जो गंदगी और संकट उन्होने अपने कृत्यों द्वारा अपने आप पर ओढ लिए थे, उससे बाहर निकलने की योजना उसी वक्त परमेश्वर के पास तैयार थी। उप्पत्ति ३:१५, में परमेश्वर सांप को बताता है की, स्त्री का वंश उसके वंश को कुचल डालेगा और वह (शैतान) उसकी एड़ी डसेगा।

वह यीशु, जो उसका इकलौता बेटा, उसके बारे में बात कर रहा था। जो आत्मिक रुप से पहले से ही मौजूद था। परमेश्वर त्रयेक परमेश्वर है। हम उसे त्रिएक कहते है। पहले परमेश्वर जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। इसमें से हर पवित्र व्यक्ती का आपके जीवन में अमूल्य स्थान है।

यीशु पहले से ही अस्तित्व में था, लेकिन मनुष्य को इस पाप की खाई से बचाने, उसे खुद इस पृथ्वी पर आना जरूरी था। मेरे और आपके जैसे सामान्य शरीर को धारन करके उसे इस पृथ्वी पर आना जरूरी था। मनुष्य बनने के लिए उसे नम्र होना जरूरी था। याद रखिए यीशु खुद प्रभू और परमेश्वर का पुत्र है।

उसकी यह योजना, पृथ्वी पर यीशु का जन्म होना यही थी। परंतु यह योजना परमेश्वर के समस्त योजना के निश्चित वक्त के बगैर होना असंभव था। इफिसियों ३:१० हमें बताता है की, कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थान में है, प्रकट किया जाए। इसका मतलब है की, अशुद्ध आत्माएँ और उनका सरदार - शैतान जिसने विद्रोह किया उसका ज्ञान कलीसिया को किया जाएगा।

शुद्ध हिंदी में हम ऐसे युद्ध में शामिल है जो युद्ध परमेश्वर और शैतान के बिच है। कौन जितेगा यह पहले से ही निश्चित है। विजयी सैना निश्चित है। और वह परमेश्वर है जो यह युद्ध जितेगा। आप किस की तरफ से लढ़ रहे है?

अगर आप शैतान की सेवा रहे है, उसकी छुटी बातों पर विश्वास कर रहे है तो आप जो पहले से हारा है उसकी सेवा कर रहे है। परमेश्वर की सैना यह विजयी सैना है।

आप हारे हुये के लिए कार्य कर रहे है। परमेश्वर के पास विजयी सैना है।

कोई बात नही अगर आप अब तक हारे हुये के लिए कार्य कर रहे थे, अंतिमतः यह परमेश्वर की योजना है। वह नया जन्म पायें हुये लोगों को - ऐसे लोग बनाएगा जो शैतान और उसके दुष्ट आत्माओं को हराने की इच्छा रखते है, जो परमेश्वर से प्रेम करेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।

अब आप सोचेंगे की परमेश्वर ने क्यों हमें इस युद्ध में घसीटा है। यह याद रखिए की, शैतान ने परमेश्वर ने बनाए मनुष्य को उद्यान में हराया, और सब अधिकार और आशिष जो परमेश्वर ने उसे दिये थे वह उससे चुरा लिए। पर असल में तो खुद मनुष्य ने शैतान की बातों में फँसकर उसे वह सब दे दिया। और अब वह सब कुछ वापस शैतान से लेकर मनुष्य को देना परमेश्वर को अयोग्य - गैर कानूनी लगता है।

परमेश्वर ने जो कार्य उद्यान में किया और जो कार्य वह आज भी कर रहा है वह कार्य यह है : वह मनुष्य को इस प्रकार से तैयार कर रहा है की, वह शैतान से वह सब कुछ वापस ले ले जो सब शैतान ने उससे चुराया था।

यीशु परमेश्वर की संपूर्ण योजना की मुख्य चाबी है।

अब मैं अपनी कहानी उप्पत्ति के ३ रे अध्याय सें शुरू रखती हूँ जहा परमेश्वर ने शैतान से कही की, उसका चिर कुचला जाएगा। (इसका मतलब उसका सब अधिकार नष्ट किया जाएगा)। आगे जो कुछ होने वाला है वह सब परमेश्वर ने पहले से ही बता दिया है। और जब स्वयं परमेश्वर ने यह कहा है की, यह होगा तो निश्चित ही वैसे ही होगा।

पर यह उसकी योजना पुरी होने से पहले २००० साल बीत गये, और पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढती ही गयी। पाप और संकटी दोनों भी बढते गए। यहा पाप बढता है वहा संकट भी बढता है।

अब मनुष्य परमेश्वर के सामने, अपवित्र और अधर्मी हो गया। अब पाप तो मनुष्य के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया था। वह पाप करने का प्रयत्न नही करता था, तो

वह उससे प्राकृतिक रीतिये हो ही जाता था। जब तक हर साल का एक निश्चित समय न आये, तब तक उन्हें अपने पापों का कोई एहसास ही नही होता था। सिर्फ साल के उस निश्चित काल में वे अपने पापों को कबुल करने का या उसके विरुद्ध जाने का मौक़ा मिलता था।

मुझ में और आप में पापी स्वभाव है, प्रत्येक मनुष्य में पापी स्वभाव रहता है। हमारे जन्म सें ही हमें वह मिला है। जब हमें अपने पापों का एहसास होता है, तब हमें अपने पापों का उसे हिसाब देना पड़ता है।

नियम

परमेश्वर अपने लोगों से प्रेम करता है। जो लोग उससे प्रेम करते है और उसकी आज्ञा मानते है, उसके संगती में रह सकता है, यही परमेश्वर की उसने लिए योजना थी। आप ने देखा की जब मनुष्य के जीवन में पाप आया, तब वह परमेश्वर के संगती में ठिक तरह सें नही रह सकता था। परमेश्वर आत्मा है और हम उसकी संगती आत्मा में ही प्राप्त कर सकते है।

परमेश्वर प्रकाश है। और मनुष्य अंधकार है, इसी लिए परमेश्वर और मनुष्य दोनों के बीच की संगती, एकता और रिश्ता तूट गया था। बाइबिल कहता है, तब परमेश्वर और मनुष्य के बीच की संगती तुट गयी। परमेश्वर और मनुष्य के बीच जो दिवार बन गयी वह दिवार पाप की दिवार थी।

परमेश्वर ने नियम की योजना बनाई । यदि मनुष्य परमेश्वर का मित्र बनकर रहना चाहता है, तो उसे परमेश्वर के नियमों का पालन करना जरूरी था। परमेश्वर ने दिये नियम पूर्ण, पवित्र और न्यायी थे। उन में पवित्र होने के लिए क्या करना जरूरी इन का विवरण था।

पाप करने सें पहले वह यह जानता था की, परमेश्वर उस से क्या चाहता है और क्या नही चाहता। वे दोनों पुरे दिल, आत्मा और मन सें एक थे। मगर पाप करने के बाद वह परमेश्वर की इच्छाओं सें अंजाना बन गया।

पाप के कारण वह दिल कठिन हो गया। अब वह परमेश्वर की इच्छाओं से अंजाना बन गया, इस लिए परमेश्वर को अपनी इच्छाए लिख कर देनी पड़ी। परमेश्वर की इच्छाओं सें अंजाना बनने के कारण उसे अपनी प्राकृतिक क्षमता सें परमेश्वर को संतुष्ट करना था। परंतु मनुष्य पूर्ण न होने के कारण उसे उन सब नियमों का पालन करना असंभव हो गया। जब तक वह इस पृथ्वी पर रहेगा वह कभी भी पूर्ण नही बन सकेगा।

परमेश्वर का नियम कहता है की, यदि आप एक बात में चूक जाते है तो आप सब बातों में दोषी ठहरते है (याकूब २:१०)। नियम परिपूर्ण था और उसका पूरी तरह सें पालन करने के लिए मनुष्य को परिपूर्ण होना जरूरी था।

बलिदान

नियम स्थापित करने के बाद भी मनुष्य उसका पुरी तरह से पालन न कर सका, इसलिए उसकी गलतीयों को या कमियों को कम करने के लिए परमेश्वर ने बलिदान की व्यवस्था शुरू कि। यह बलिदान लोहू का बलिदान था। उसमें लोहू बहाना जरूरी था। लोहू बहाना शायद आपको विचित्र लगे, परंतु इसके पीछे जो कारण है वह इस बात को स्पष्ट करता है। जब परमेश्वर ने आदम में अपना श्वास फुँका तब वह जीवित हो गया। उसका लोहू आदम के सारे शरीर से बहने लगा। बाइबिल बताता है , क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है (लैव्यव्यवस्था १७:११)। आपको पता है की यह सच है। लोहू के बिना कोई भी नही जीवित रह सकता। अगर आप लोहू के बहाव को बंद कर दे तो आप अपने जीवन को बंद करते है।

जब शैतान ने आदम और हव्वा को प्रलोभन में डाला और उन्होने पाप का चुनाव किया तब पाप द्वारा मृत्यू भी आया (रोमियों ५:१२)। बीमारी, गरीबी, युद्ध, क्रोध, वासना और द्वेष यह सब मृत्यू के ही प्रतिनिधित्व करते है। मृत्यू को ढाँकने वाली सिर्फ एक ही चीज है और वह जीवन है।

जब मनुष्य ने परमेश्वर के दिये नियम तोड़े और उसने पाप किया तब वह मृत्यू के समान था। और पाप का बलिदान सिर्फ लोहू का बलिदान था, क्यों की लोहू में जीवन है (लैव्यव्यवस्था १७:११)।

इसके पीछे परमेश्वर की एक और योजना थी, जो उसने यहा पे किया वह उसके भविष्य में पुरे होने वाली एक महत्त्वपूर्ण योजना का प्रतिनिधित्व करता था। संदेशवाहकोने ऐसे एक मसीहा, तारणहारा, छुटकारा देनवाला मुक्ति देने वाला उसके बारे में संदेश दिया था।

परमेश्वर हमारे लिए संदेश दे रहा था। याद रखिए जब परमेश्वर कुछ कहता है तो वह वैसा करता है।

यह मसीहा खुदका बलिदान करेगा, जो बलिदान अंतिम और पूर्ण होगा। वह पापरहित, पवित्र बलिदान का मेमना था। अब उन्हें अपने पापों के प्रायश्चित के लिए किसी दोषरहीत, पवित्र मेमने की बली चढ़ाने की जरूरत नही थी। यीशु आयेगा और वही अंतिम और आखिरी बलिदान बनेगा। उसका बलिदान इस नियम के व्यवस्था को समाप्त कर देगा।

उस विषय का एक संदेश में वापस दोहराती हूँ।

यशायहा ५३:३-७

> ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरुष था। रोग से उसकी जान - पहिचान थी; और लोग उससे मुंह फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना।
>
> निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखी को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा - कूटा और दुर्दशा में पडा हुआ समझा।
>
> परंतु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताडना पड़ी, कि उसके कोडे खाने से हम लोग चंगे हो जाये।
>
> हम तो सब भेड़ो की नाई भटक गये थे; हम में से हर एक ने अपना - अपना मार्ग लिया; और प्रभू ने मह सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।
>
> वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड वध होने के समय या भेडी ऊन कतरने समय चुपचाप शांत रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला।''

संदेश दिया गया था। और लोक उनके मसीहा, मुक्तिदाता का इंतजार कर रहा थे। मुझे नही लगता उन्हें सही तरह से मालूम था कि वे किसके लिये इंतजार कर रहे थे।

उन्हें इस बात का अंदाजा न था, की आनेवाला मसीहा उन्हें उस नियमों और कामों से छुटकारा देगा, जो वे परमेश्वर को खुश करने हेतु किया करते थे, जो उन्हें असंभव था। उन्हें यह पता न था कि वह जो इस दुनिया का मसीहा, मुक्तिदाता है; वह संपूर्ण पिढी का पाप मिटाने के लिए अपना लोहू उस कलवरी के क्रूस पर बहने देगा।(३) लोहू में जीवन है यह याद रखिये (लैव्यव्यवस्था १७:११)। वे इंतजार में थे पर उन्हें यह भी पता न था कि वे किस का इंतजार कर रहे है।

यीशु आता है

परमेश्वर का समय आ गया। मरियम नाम कि कुँवारी को पवित्र आत्मा ने दर्शन दिया। परमप्रधान परमेश्वर की सामर्थ से वह गर्भवती हो गयी, वह गर्भ यीशु परमेश्वर का पुत्र था। यह इस प्रकार होना था।

यीशु प्रारंभ से ही आत्मिक रुप से अस्तित्व में था, और स्वर्ग था। प्रारंभ से ही वह परमेश्वर के साथ था। पर अब मनुष्य देह धारण करने वाला था, जिस से वह पाप में फँसे लोगों को बाहर निकाले, क्योंकि उस पाप के दलदल सें मसीहा के बगैर बाहर निकलना उनके लिए असंभव था।

यूहन्ना १:१,१४ बताती है कि, यीशु वचन है, वचन के देहधारी होकर हमारे बीच में निवास किया। इब्रानियों ४:१५ कहता है, यीशु जो महायाजक वह सब बातों में हमारे समान परखा गया तो भी निष्पाप निकला। प्रियों, यही सबसे बडा फरक है।

यीशु परमेश्वर में पूर्ण रुप से जुड़ा था, और उसमें जीवित था। जिस तरह पाप करने से पहले आदम परमेश्वर में एक था। वैसे ही यीशु परमेश्वर में एक था। बाइबिल उसे दुसरा आदम कहता है। (देखिए १ कुरिन्थियों १५:४५,४७)। रोमियों ५:१२-२१ कहता है, जब एक मनुष्य (आदम) के द्वारा पाप जगत में आया, फिर एक मनुष्य (यीशु) कि धार्मिकता किस प्रकार परमेश्वर और सब मनुष्यों का मिलाप कर सकता है।

आदम का पाप आपके पास आप के परंपरागत आया। अब, अगर आपकी इच्छा है तो दुसरा आदम, यीशु आपको उसकी धार्मिकता देना चाहता है। आदम परमेश्वर के जीवन

से भरा हुआ था। पर पाप पाप आया और मनुष्य का जीवन अंधकार से भर गया। उसके जीवन का प्रकाश निकल गया।

आपका जीवन अंधकार से भरा है या प्रकाश से?

यीशु भी स्त्री द्वारा जन्मा मनुष्य था, लेकिन उसका जीवन परमेश्वर के प्रकाश से भरा हुआ था। यीशु ने कभी भी पाप नही किया; वह पाप प्रती संपूर्णतः योग्य बलिदान था।

पुराने नियम के जमाने में लोगों को हमेशा अपने पापों के खातिर बलिदान करना पड़ता था, पर फिर भी अपरा हमेशा वही ही रहता था।

आप अपने आप में अपराधीपण महसूस करते है, या स्वतंत्रता? गंदगी या शुद्धता?

यीशु परमेश्वर का पापरहित बलिदान का मेमना बना, जिसने सारे जग का पाप खुद हर लिया। इब्रीनियों १०:११-१४ कहता है:

> हर एक याजक (मनुष्य) खड़े होकर प्रतिसाद सेवा सेवा करता है, और एक प्रकार की बलि को ज पापों को कभी दूर नही कर सकती, बार - बार चढाता है। पर यह पापों के बदले एक (मसीह) ही बलि सदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा है। उसी समय से वह इसकी प्रतीक्षा कर रहा है कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे का पीढा बने। उसने एक ही चढाव के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाता है, सदा के लिए सिद्ध कर दिया है।

पुराने नियम के याजक लोगों की और से बलि चढाते थे। उन्हें हमेशा, नित्य क्रम से यह करना पड़ता था, हमेशा उन्हें अच्छा बनने के प्रयास में रहना पड़ता था पर हमेशा अपने अंदर अच्छा न रह पाते।

पर इब्रानियों हमें बताता है की यीशु ने एक ही बार खुदका पूर्ण बलिदान किया। उसने हर नियम माना। उसका विजय हर उस के लिये है जो उस पर विश्वास करेगा।

४

क्या आप विश्वास कर सकते है?

इस पर विश्वास करें की, यीशु ने वही किया जो बाइबिल कहती है। वह परमेश्वर का पुत्र है, जो कुँवारी द्वारा जन्मा। उसने मनुष्यों के पाप खुद पर लिये। वह हमारी खातिर बलिदान बना और क्रूस पर अपनी जान दि। वह मृत अवस्था ने ही नही रहा। तीन दिन वह कबर में था उस समय उसने नरक में प्रवेश कर शैतान को हरा दिया।

उसने जो सब किया वह अपनी इच्छा से किया, क्यों की वह अपने पिता से (परमेश्वर से) प्रेम करता था, और क्योंकि परमेश्वर और यीशु आपसे और मुझसे प्रेम करते है कोई भी योजना उनके लिए बडी या कठिन न थी। उसने जो किया वह परमेश्वर के लोगों को उससे मिलाने के लिये किया। यीशु ने हमारे खातिर क्रूस पर जान दी, और हमारे खातिर नरक में प्रवेश किया। और फिर परमेश्वर वचन दिया वैसे ही तीसरे दिन यीशु वापस मृत्यू से जी उठा।

क्रूस पर क्या हुआ

जब यीशु क्रूस पर टँगा हुआ था, तब उसने हमारे पाप खुद पर लिये। परमेश्वर कभी भी पाप में नही रह सकता। जब यीशु ने हमारे पाप खुद पर लिये, उसी वक्त परमेश्वर का उससे संबंध तुट गया। यही बात उद्यान में आदम के साथ हुई। जब उसने पाप किया तब परमेश्वर की संगत उसे झोड कर चला गया। परमेश्वर पाप में कभी नही रह सकता। पाप मनुष्य और परमेश्वर के बीच दिवार खडी कर देता है।

जब यीशु हम सबका पाप अपने उपर ले रहा था तब उसे परमेश्वर की संगती उसके साथ न होने का एहसास हुआ। उसने कहा, मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड दिया? (देखिए

मत्ती २७:४७)। यीशु को पता था कि यह होने वाला है, पर पिता उसके कल्पनाओं से अधिक कठिन हृदय वाला निकला, और इस कारण वह रो पडा। उसने अपना आत्मा परमेश्वर के हाथों सौंप दिया और वह मर गया। फिर उसके शरीर को कबर में ले जाया गया पर उसकी आत्मा नरक में गयी जहा उसकी जगह थी।

याद किजिए इस पुस्तक की एकदम प्रारंभ में ही मैंने यह कहा है जब आपकी मृत्यू होगी। सिर्फ आपका शरीर मरता है। बाकी आपकी आत्मा और जान या तो स्वर्ग में जाती है या फिर नरक में जाती है।

जबतक कोई सत्य पर विश्वास नही करता तबतक उसे स्वर्ग जाने की कोई आशा नही है। जबतक अपने पुरे दिल से आप यह कबुल नही करते की, यीशु आपके खातिर मरा, तबतक आपका स्वर्ग में प्रवेश नही हो सकता। वह आपके खातिर हुआ और वह सब दंड जिसके आप हकदार थे, उसने खुद पर लिये। उसने आपके सारे पाप उठाये और आपका कर्जा चुकाया। उसने यह सब आपके लिये किया क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है। यूहन्ना ३:१६ कहता है :

> ''परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए।''

यीशु आपके खातिर नरक गया। वह आपके लिए मरा। उसने आपको पोपों का कर्जा चुकाया। परमेश्वर यीशु से विश्वास योग्य था। और परमेश्वर ने वही किया जो उसने अपने पुत्र यीशु से कहा था। उसने यीशु को मृत्यू से जिलाया।

पर तबतक तीन दिन वह नरक और शैतान पर विजयी होने की संतुष्टता में न्याय के दरबार में अकेला था। उसने मृत्यू और नरक पर विजय प्राप्त करके उसकी चाबियाँ हासिल कर ली। उसने उन कैदियों को संदेश दिये जो स्वर्ग के कारण कैदी हुये थे। उसने उन्हें विजय दिया।

तीसरे दिन वह मृत्यू से पुनः जी उठा। उसके बाद उसने स्वर्ग प्रवेश किया, मनुष्यों के पापों के खातिर जो निर्दोष लोहू बहाया गया उसके हमेशा के चिन्ह के लिए उसने अपना कुछ खून वहा रखा, क्योंकि लोहू में जीवन है (लैव्यव्यवस्था १७:११)।

वापस विश्वास की ओर

आपको और किस बात पर विश्वास करना जरूरी है।

उसने आपके लिये जो किया है उस पर विश्वास कीजिए।

अपने पुरे दिल से उस पर विश्वास करो। शायद जो कुछ में आपको बता रही हूं वह आपको समझ में न आये, पर फिर भी अपने दिल से उस पर विश्वास करे। अपने दिल कि (आत्मा की) सुने।

रोमियों १०:९ बताता है की, यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभू मानकर, स्वीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार (नया जीवन) पायेगा।

इस वक्त जो मै आपको बता रही हूँ, उस पर आप विश्वास करते हैं, और यीशु को अपनाना चाहते है, तो आपको यह कहना होगा : मै विश्वास करता हूँ की यीशु परमेश्वर का पुत्र है। मै विश्वास करता हूँ की वह मेरे खातिर मरा। मै विश्वास करता हूँ की वह तीसरे दिन मृत्यू में से जी उठा।

रोमियों १०:१० बताता है, धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है। धार्मिकता मतलब, हम ने कभी पाप नही किया ऐसा उसका अर्थ होता है. इसका अर्थ : परमेश्वर के साथ सच्चा और शुद्ध रिश्ता होना।

यीशु और कुछ उसने किया इन पर का आपका विश्वास ही आपको धर्मी बना सकता है।

आपका कोई भी या कितना भी अच्छा कर्म आपका और परमेश्वर का रिश्ता नही सुधार सकता। नित्यक्रम से कलीसिया जाने से आप धर्मी नही बन सकते। तो पहले विश्वास के द्वारा आप धर्मी ठहरना जरूरी है, और फिर अच्छे कर्म आपके हृदय परिवर्तन के गवाह बनेंगे। लेकिन पहले आपका हृदय परिवर्तित और शुद्ध होना जरूरी है। आपने अपने पुरे

दिल सें, अंतरात्मा से विश्वास रखना जरूरी है।

रोमियो १०:१० आगे बताता है, उद्धार के लिए मुंह से स्वीकार कर। स्वीकार करना मतलब प्रमाणित करना। जो आप बोलते है वह आपके लिए निश्चित और प्रमाणित हो जाता है। बोलना मतलब, प्रतिष्ठित करना।

संक्षिप्त विवरण

नया जीवन पाने के लिए आपने विश्वास करना जरूरी है

- परमेश्वर है (उत्पत्ति १:१ इब्रानियों ११६)।
- यीशु परमेश्वर का पुत्र है, जो कुँआरी द्वारा जन्मा, और जिसने मानवी देह धारण किया (मत्ती १:१८; मत्ती १:२३)।
- यीशु प्रभु है, वह त्रिऐक परमेश्वर का एक भाग है (कुलुस्सियों २:९,१०; इब्रानियों १:५-८)।
- मनुष्य को मदद कर सके इस लिये वह मनुष्य का देह धारन कर आया (यूहन्ना १:१; यूहन्ना १:१४; लुका ४:१८-२१)।
- उसने आपके सारे पाप अपने आप पर लिये और क्रूस पर वह सब मिटा दिये (यशायाह ५३:४,५; २ कुरिन्थियों ५:२१)।
- आपने पापों के खातिर वह मारा गया (इब्रानियों २:९)।
- आपकी जगह वह नरक में गया और वहा जाकर उसने शत्रू पर विजय हासिल की (प्रेरितों २:३१)।
- तीसरे दिन, वह मृतकों में से जी उठा (लूका २४:१-७; प्रेरितों २:३२)।
- अब वह पिता के साथ स्वर्ग में उसकी दहिनी ओर बैठा है (इब्रानियों १०:१२)।

- इ जो कोई उस पर विश्वास करे उसके लिये वह हाजिर है (रोमियों १०:१३; यूहन्ना १:१२)।
- पवित्र आत्मा द्वारा वह आप में जीवन में वास करेगा, और वापस आपको पितासे एक करेगा (रोमियों ८:१४-१६)।

इसीका अर्थ नया जीवन पाना है।

यदि आप इस पर विश्वास करे तो आप :

- आप पापी है और आपको उद्धारकर्ता की जरूरत है यह कबूल करना (रोमियों ३:२३,२४)।
- अब आपके पाप परमेश्वर के पास कबुल करे (१ यूहन्ना १:९)।
- बदले हुये विचार रखे - अपने पापों को छोडकर परमेश्वर के लिए आपका नया जीवन जीने की इच्छा रखिए (प्रेरितो ३:१९)।

प्रार्थना करे

याकूब ४:२ कहता है, तुम्हें इसलिए नही मिलता क्योंकि तुम माँगते नही। अपने दिल में यीशु को मांगे; अपने पापों की क्षमा उससे माँगो। वह आपको क्षमा करेगा और आपके आत्मा में रहने आयेगा। आपको आत्मा परमेश्वर के लिए जीवित हो जाएगी। आप कैसे करे इसकी प्रतिदर्शी प्रार्थना यहाँ पर है। पर में आपको प्रोत्साहित करूँगी की आप अपने दिल से अपने तरीके से प्रार्थना करे।

पिता परमेश्वर मैं विश्वास करता हूँ की, प्रभू यीशु आपका पुत्र है और इस जग का उद्धारक है। मैं विश्वास करता हूँ की वह मेरे लिए क्रुसपर मरा और मेरे पाप मिटा दिए। वह नरक गया और उसने मृत्युपर विजय हासिल कि। मैं विश्वास करता हूँ की वह मृतकों में से जी उठा और आज वह आपके दाहिनी तरफ बैठा हुआ है। यीशु मुझे तुम्हारी जरूरत है। मेरे

पापों की क्षमा कर, मेरा उद्धार कर और मेरे जीवन में रहने आजा। मुझे नया जीवन चाहिए।

अगर आप सत्य पर विश्वास करते है और मार्गदर्शका का पालन करते है तो :

बधाइयाँ

आपका नया जन्म हुआ है

५

अब जब मेरा नया जन्म हो चुका है तो अब मैं क्या करू?

बढना

अब जब आपका नया जन्म हो चुका है, तो आपका मसीही जीवन में बढना जरूरी है। आपने नया जन्म पाया है, इसलिए आप एक बालक मसीही हो। अब परमेश्वर की आप के लिए यह इच्छा है की, आप उसमें बढे और एक प्रौढ मसीही विश्वासी बने, जो परमेश्वर की मार्ग पर चलने की इच्छा रखता हो, और जो परमेश्वर का वचन और उसकी आवाज पहचानता है।

वचन सिखे

जबतक आपके पास वचन नही है, तबतक आप बढ नही सकते। आपकी आत्मा और जान का पोषण करना जरूरी है, जिससे वह बलवान बन जाएगा। उसे कसरत की भी जरूरत है। जैसे आपके शरीर को तंदुरुस्त रहने के लिए भोजन और कसरत की आवश्यकता है वैसे ही आपकी आत्मा और जान की उन्नति के तंदुरुस्ती के लिए भी भोजन और कसरत की जरूरत है।

कसरत

परमेश्वर का वचन (बाइबिल) आपका आत्मिक भोजन है। आत्मिक कसरत में प्रार्थना, परमेश्वर की गीतों द्वारा स्तुति आराधना करना वचन दोहराना, परमेश्वर की इच्छाओं के, वचन के बारें में सोचना, और दुसरे विषयवासियों की संगती में रहना।

प्रार्थना

परमेश्वर आपको एक अच्छी कलीसिया में ले जाये, जहा पर आपकी आत्मिक उन्नति होगी और आप उसका वचन सिख सके, इसलिए प्रार्थना कीजिए। बाइबिल पढ़ना शुरू कीजिए। आज के जमाने में बाइबिल के कई सुलभ और सरल भाषा में अनुवाद उपलब्ध है। बस किसी ख्रिश्चन बुकशॉप में जाइए और चुन लीजिये। जैसे आप बाइबिल पढ़ना शुरू करने से पहले पवित्र आत्मा (परमेश्वर का आत्मा) को आपको वह समझने में मार्गदर्शन करने में मदद करने के लिए प्रार्थना करे।

आपने परमेश्वर के साथ अपना नया जीवन शुरू किया है, अब सदा वह आपके साथ है। अब वापस कभी भी आप अकेले नही होंगे। यीशु कहता है, मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मै तुम्हारे पास आऊँगा (यूहन्ना १४:१८)। जीन बातों के लिए पहले आपको झगड़ना पड़ता था, अब उनके लिए आपको झगड़ने की कोई जरूरत नही है। हर काम जो आप करते है उस में प्रभू आपको मदद करे इसलिए प्रार्थना कीजिए। वह आपके जीवन का नया साथी है। पवित्र आत्मा को बाइबिल में मददगार कहा गया है (यूहन्ना १४:१६)।

मुझे यकीन है की मैं संभ्रम में नही डाल रही, इसी लिए मैं आपको वापस याद दिलाता हूँ की, अब आप एक परमेश्वर, त्रिऐक परमेश्वर त्रिऐक की सेवा कर रहे हो। और परमेश्वर में समाए हर व्यक्ती का आपके नित्य जीवन में अलग अलग महत्त्व है।

पवित्र आत्मा द्वारा यीशु के नाम में परमेश्वर सें प्रार्थना करे, जो आपके जीवन में रहता है, और आपको पिता पुत्र के संगीत की अनुभूति देता है।

पाणी का बपतिस्मा

जितना हो सके उतनी जल्दी आपका पाणी से बपतिस्मा होना जरूरी है। जरूरत से ज्यादा इसे दूर मत रखिए। बाइबिल हमें बताती है की ज्यो व्यक्ती यीशु को अपना प्रभु और उद्धारक के रूप स्वीकार करता है, उसके तुरंत बाद आपना प्रभु और उद्धारक के रुप स्वीकार करता है, उसके तुरंत बाद आपका बपतिस्मा होना जरूरी है।

बपतिस्मा का मतलब पाणी में डूबना और ज्यादातर यह उस व्यक्ती द्वारा किया जाता है जो उस वक्त आप पर प्रार्थना करते है और आपको पाणी में डुबो कर वापस बाहर निकालता है।

इसका अर्थ यह होता है की, आपका पुराना व्यक्तित्व मरकर उसे गाड़ दिया गया है, साथ ही इसका अर्थ आपके परमेश्वर प्रती निर्णय की गवाही देता है। रोमियों ६ हमें सिखाता है की हम पाणी का बपतिस्मा लेते है तो, हम पाणी में डुबाए जाते है तब हम गाड़े जाते है और तब हम वापस पाणी से बाहर आते है तो हमें नया जीवन प्राप्त होता है।

सही मायने में पाणी का बपतिस्मा आपका शैतान और अशुद्ध आत्माओं (जो अंतराल में मँडराते रहते है) के विरुद्ध यह घोषित करता है की आपको प्रभू मार्ग पर चलना निश्चित किया है। अब वह आपका प्रभू है। आपने आपका पुराणा, पापी जीवन गाड़ दिया है और अब अपने प्रभु का नया मार्ग सिखना शुरू किया है। बाइबिल बताता है की प्रभु यीशु के मृत्यू और पुनरूत्थान द्वारा उसने नया जीवन मार्ग खुला किया है।

इन नये सिद्धांतों में समर्पित, विश्वासी और बलशाली होना आपके लिये बहुत जरूरी है, नही तो शैतान आपको वापस पीछे खिचेगा। १ पतरस ३:२१ कहता है की, बपतिस्मा आपको बचाता है, इसका मतलब वह आपको शैतान जो शत्रू उससे छुड़ाता है। वह यह भी स्पष्ट करता है की, मसीही में आपको क्या होना या करना है।

यहि आपको मुसा, इस्राएली लोग और लाल समुद्र के पास परमेश्वर ने उसने लिये किस प्रकार चमत्कार किया। उसने समुद्र के दो भाग कर दिये, और बिच में से उनके लिये रास्ता बनाया। मगर असल में परमेश्वर ने उन्हें उनके शत्रू से छुड़ाया। जैसे उनका शत्रू (फिरौन और उसकी सैना) उनके पास आने लगा तब शत्रू को लाल लाल समुद्र में डुबो दिया। पाणी के बपतिस्मा में आत्मिक दृष्टीसे आपके साथ क्या होता है यह उसका प्रतीक है।

अगर आपका बपतिस्मा आपके बचपन में हुआ है, जैसे कुछ धर्म संप्रदाय लोग करते हे, तो मै आपको उत्तेजित करूँगी की अब जब आप बाइबिल के अनुसार विश्वास करते है, उसी के अनुसार वापस बपतिस्मा ले।

धर्मसंप्रदाय में अगर सच्चा विश्वास नही है तो वह कुछ भी नही है। लोगों को सच्चे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा से दुर रखने के लिए धर्म - संप्रदाय यह शैतान की खोज है।

धर्म संप्रदाय यह मानवी सिद्धांतोंपर बनी व्यवस्थाप्रणाली है। जिस में परमेश्वर खुश करने के लिए नियम बताये जाते है। इस व्यवस्था से अंतरिक मनुष्य को नही बदलता पर यदि लोगों को कर्मकांड के बीच घिरे रखता है।

लोग कलीसिया के - सिद्धांत और नियमोंपर चलते है यह अच्छा है, पर अगर उसने कोई सच्चाई या मतलब नही तो वें सब बेकार है। पर अब जब यीशु द्वारा आपका पिता के साथ रिश्ता है तो आप बपतिस्मा ले सकते है और आपके लिए महत्त्व सखता है क्यों की उस में विश्वास है।

पाणी के बपतिस्मा के द्वारा आप आपका पुराना मनुष्य (पुराना स्वभाव) और पुराने मार्ग को गाड़ रहे हो इस की घोषणा कीजिए।

विशेष सुचना :नया जन्मा होते समय आपको कोई भावनीय अनुभूति हो, यह कोई जरूरी नही। शायद आप में कोई विशेष भावना निर्माण न हो। कई लोग उनके उपर का कोई बडा बोझ गिर गया हो ऐसा अनुभव बताते है। पर में आपको बताना चाहूँगी की, आपका विश्वास भावनाओंपर आधारित न हो। नाही आपको उस निश्चित समय को याद रखना जरूरी है, जब आपने यीशु का अपना उद्धारकर्ता के रुप में स्वीकार कया। परंतु महत्त्वपूर्ण बात यह है की, आपको आपके दिल से पता होना चाहिए की, आपका नया जन्म हो गया है।

मेरे चारो बच्चों का नया जन्म हो गया है; परंतु उनमें से दो बच्चे आपको उनसे उद्धार का निश्चित काम और समय नही बता सकते। पर उनकी उन्नति यीशु होती ही जा रही है। मेरा उनके बारे में यह पुरा विश्वास है की, यह परमेश्वर की ही उनके लिये निश्चित योजना है। जिन बच्चों को उनके माँ - बाप मसीही जीवन में नही बढाते उनके लिए भी मैं परमेश्वर को धन्यवाद देती हूँ, क्योंकि परमेश्वर के पास उनके लिए बहुतही महत्त्वपूर्ण योजना है।

६

क्या और कुछ बाकी है?

जी हाँ। और एक बात जानना आपके लिए बहुत ही जरूरी है।

आपके लिये और भी आशिष बाकी है। बाइबिल उसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहता है। बाइबिल बताता है, जब यीशु आया तब यहून्ना ने कहा, की, यीशु लोगों को पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा (मत्ती ३:११)। यूहन्ना लोगों को पाणी से बपतिस्मा देता था और लोग अपने पापों का पश्चात्ताप करते थे - पर, यह बपतिस्मा पवित्र आत्मा का है - फिर यह क्या है?

प्रेरितों १:५-८ में यीशु इस पवित्र आत्मा के बारे में बताता है। उसने कहा जब वे पवित्र आत्मा पाएंगे तब उन्हें सामर्थ (कूवत, बल, हिम्मत), प्राप्त होगा और यह उन्हें यीशु के लिए गवाह बनाएगा।

जब आप यीशु का स्वीकार करते है तब आप आपके मनुष्य आत्मा में पवित्र आत्मा को स्वीकारते है। परंतु पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मतलब पूर्णतः उससे भर जान। वह आपको उसकी आत्मा से भरता है और आप उसमें एक हो जाते है। यह कुछ इस प्रकार है मानो, जैसे आप पवित्र आत्मा सें कहे की, वह आपको उसके सामर्थ और कूवत से भर दे जिससे आप उसकी इच्छा पुरी कर सके और मसीही जीवन जी सके।

प्रेरितों में मुख्य *दुनामिस* इस ग्रीक शब्द का अनुवाद सामर्थ ऐसा किया गया है। जिसका असली अर्थ चमत्कारक सामर्थ, कूवत, बल और ताकत ऐसा होता है। चमत्कार करनेवाला सामर्थ्य!

अपने आप से पुछिये : क्या सामर्थ, कूवत, और ताकत की मेरे जीवन में आवश्यकता है? यही आपका जवाब हाँ है तो, आपका पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा होना जरूरी है।

विशेष सूचना : यदि आपने कोई गुप्त पाप किया है तो मैं आप को कहूँगी की, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेने से पहले, उन सभी पापों का पश्चात्ताप करे। जादूटोना, प्रश्नफलक, भविष्य बताना, काला या सफेद जादू, ज्योतिष - शास्त्र, गुप्त काम, पूर्व भागों के धर्म, सम्मोहन, मानसशास्त्रीय कृत्य ओझो सें पूछना, भूत साधना यह सब बातों को परमेश्वर को घृणा है (व्यवस्थाविवरण १८:९-१२)।

यदि आप ऐसी बाते करते थे तो परमेश्वर से उसके लिए क्षमा माँगिये और आपको इन सभी से शुद्ध करने को कहिए। आपने मुंह से यह कबुल कीजिए की अब से आगे यह बाते वापस कभी नही करेंगे।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के लिए शास्त्र संदर्भ

प्रेरितों १:८

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरुशलेम तथा सारे यहूदा प्रदेश और सामरी प्रदेश में, यहा तक कि पृथ्वी की छोर तक तुम मेरे गवाह होगे।

प्रेरितों २:१-४

''पिन्तीकुस्त पर्व का दिन आया। सब शिष्य एक जगह इकट्ठे थे,

''अचानक आकाश से बडी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर, जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया।

''उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दी, और उन में से हर एक पर आ ठहरी, और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए। जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य - अन्य (परकीय) भाषा बोलने लगे।''

प्रेरितों ८:१७

''तब पतरस और यहून्ना ने उन पर हाथ रखे और उन्होने पवित्र आत्मा पाया।''

प्रेरितों १०:४४-४६

''पतरस यह बाते कह ही रहे थे कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया।''

''जो खतना किये हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित रह गए की अन्य जातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उँडेला गया।''

''उन्होंने उन्हें भांति - भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुना और देखा।''

प्रेरितों १९:६

''जब पौलुस उन पर हाथ रखे तब उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न - भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे।

भिन्न - भिन्न भाषा

आपने जरूर देखा होगा की, जब लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करते है उस वक्त वे भिन्न -भिन्न भाषाओं में बोलते है।

इसका मतलब है, उनकी मातृभाषा के अलावा दुसरी भाषा में बोलना। यह भाषा शायद कोई जानता हो या, देवदूतों की भाषा हो सकती है (जो कोई इनसान न जानता हो) (१ कुरिन्थियों १३:१)। इस भिन्न - भिन्न भाषाओं में बोलने का आसान और स्पष्ट रुप से स्पष्टीकरण किया जाए तो वह एक आत्मिक भाषा है ऐसा होगा। पवित्र आत्मा आपके द्वारा यह भाषा बोलता है परंतु आपके वह समझ में नही आती। पवित्र आत्मा प्रत्यक्ष रूप से आपके द्वारा इस भाषा में बाते करता है।

भाषा एक प्रतिभास होती है। मतलब हम यह भाषा अपने मस्तिष्क से नही समझ सकते। यह आत्मिक भाषा है।

१ कुरिन्थियो १४:१४ में पौलुस कहता है, यदि आप अन्य भाषा में प्रार्थना करे तो आपकी बुद्धी काम नही देती। उसी अध्याय ते चौथे वचन में पौलुस कहता है, जब आप अन्य भाषा में प्रार्थना करते है तो, आप अपनी उन्नति करता है।

अन्य भाषाओं में कि गयी प्रार्थना यह शाश्वती देता है की हम उन कठिन परिस्थितीयों में भी संपूर्ण और सही प्रार्थना कर सकते है जब हमें क्या प्रार्थना करणी चाहिए यह समझ में न आये। रोमियों ८:२६ हमें बताता है,

''इसी प्रकार आत्मा (पवित्र आत्मा) भी हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करा है; क्योंकि हम नही जानते कि हमें प्रार्थना किस रिती से करना चाहिए। परन्तु आत्मा स्वयं ऐसी आहें भर - भर कर जो बयान करने के बाहर है, हमारे लिए बिनती करता है।''

अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने सें आपकी आत्मा बलशाली बनती है। उस से आपकी आत्मिक तौर से उन्नति होती है। यहूदा १:२० बताता है :

''हे प्रिय भाइयों, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए।''

हाथ रखना

शायद आपको यह अनुभूति मिले की, आप अपना हाथ रखकर कोई ऐसा व्यक्ती प्रार्थना कर रहा हो जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पर विश्वास करता है, और खुद अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हुये आप पर अपना हाथ रखकर प्रार्थना करें।

विश्वास के द्वारा

लूका ११:१३ बताता है :

''जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो तब तुम्हारा स्वर्गिक पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।

इसीलिए माँगो - आप स्वयं परमेश्वर से मांग सकते है।''

पवित्र आत्मा उसकी इच्छा से आयेगा

फरवरी १९७६ में जब में अपने कार में जा रही थी तब मुझे पवित्र आत्मा मिला। तब प्रभु मुझे उसकी और सामर्थ और संगती से भरे इसके लिए मैं रो - रो कर प्रार्थना कर रही थी। मैंने कहा, प्रभु मेरी अपेक्षा से जादा मुझे तेरे विश्वास और पवित्र आत्मा के सामर्थ से भर दे। मुझे मेरी परेशानियों पर विजय चाहिए था जो मैं नही पा रही थी।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलने के कई समय पहले मेरा नया जन्म हो चुका था। यदि मेरी मृत्यू होती तो मेरा उद्धार पहले से ही होने के कारण मे स्वर्ग में जाती। परंतु जबतक मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नही मिला था मेरा जीवन एक सामर्थशाली मसीही जीवन नही था। उस समय में निराशा के कारण रो पड़ी, और उसी शाम में प्रभू ने मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया।

मै अभी भी अन्य भाषाओं में प्रार्थना नही कर सकती थी (क्योंकि मुझे उसके बारे में कुछ भी पता नही था)। उस वक्त शायद अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना शायद मुझे डरावना लगता। फिर भी उस समय मुझे बहुत सामर्थ, कूवत, समझदारी और दृढ विश्वास मिला। इसके बाद अगले कुछ हफ्तों में परमेश्वर ने मुझे ऐसे कुछ रेडिओ कार्यक्रम और किताबों सें मिलाया जिनके द्वारा मुझे पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के विषय में जानकारी मिली।

पहले तो समझ में नही आया कि मेरे साथ क्या हो रहा है। मुझे बस इतना पता था की यह अद्भुत है और यह परमेश्वर है। जब मुझे अन्य भाषाओं के बारे में पुरा ज्ञान हुआ, तब मैंने प्रभू से पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना कि और उसने मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर दिया।

किस प्रकार अन्य भाषा प्राप्त करे

पवित्र आत्मा से आपको भरने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करे। बस ऐसी सीधी और आसान प्रार्थना कीजिए, हे पिता, यीशु के नाम में मै आपसे प्रार्थना करता हूँ की मुझे अन्य भाषाओं के प्रमाण के साथ पवित्र आत्मा से भर दो।

अब परमेश्वर की संगती में निश्चिंत हो जाइये। वह आपसे प्रेम करता है, और उसका जो सब कुछ सबसे अच्छा है वो सब वह आपको देना चाहता है। इसलिए चुपचाप पवित्र

आत्मा का इंतजार कीजिए और यह विश्वास रखिये की आपको वह मिल रहा है। शायद वह मिलते समय आपको कोई बदलाव की अनुभूति हो भी सकती है, और नही भी हो सकती। अपने आपको अपनी भावनाओं के बहान में न बहने दे, परन्तु परमेश्वर के विश्वास योग्य वचनों में बहने दे।

आपकी अंतरात्मा मे आपको जो आवाज सुनाई देगी, वह पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, उसकी मदद से अपने मुंह से बोले। यह शब्द आपके मस्तिष्क से नही आयेंगे। याद रखिए यह शब्द या भाषा आपके मस्तिष्क को समझ में नही आयेगी।

इसी लिए बहुत लोगों के लिए यह बडी कठिन बात है। हम अपने जीवन चक्र का सब अधिकार अपने मस्तिष्क को देते है। यह संपूर्ण किताब आत्मिक जीवन पर आधारित है, यह आपको आपका प्राकृतिक जीवन नही बल्कि आत्मिक जीवन जीना सिखाती है।

आपको कही ऐसा शब्द, वाक्य सुनाई देंगे जो आपको अंजाना - अपरिचित है। पर फिर भी विश्वास के साथ उसका उच्चारण कीजिए। प्रेरितों २:४ बताता है, ''... जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य - अन्य भाषा बोलने लगे।''

अब आप इस भाषा का उपयोग कभी भी कर सकते है। फिर चाहे आप अपने आपके लिए - या अपनी उन्नति के लिए इसका उपयोग कर सकते है, या दुसरों के लिए प्रार्थना करते समय भी आप इसका उपयोग कर सकते है। (जैसे जैसे आप इस भाषा का उपयोग करेंगे वैसे वैसे यह भाषा बढती जाएंगी उसकी उन्नति होती जाएंगी)। इस भाषा का उपयोग ऐसे लोगों के बिच न करे जो इसे समझ नही सकते। अन्य भाषा कलीसिया की व्यवस्था या अन्य बातें सबको स्पष्ट कर सकती है।

आत्मा में अपने नये जीवन का आनन्द उठाये।

सुचना :

यदि आपको कोई परेशानी है, तो बिना किसी हिचकिचाहट से मेरे ऑफिस से संपर्क कीजिए।

क्या आपने सही निर्णय लिया है?

यदि इस किताब को पढकर आपने यीशु का या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है, तो कृपया हमें उसके बारे में बताइये। मै आपको उसमें और मार्गदर्शन और उत्तेजन दूँगी। हमें आपके लिए प्रार्थना करने में और आपके आनन्द में शामिल होने में बडी खुशी होगी।

आनन्द मनाइये,
यीशु आपसे प्रेम
करता है!

''... तो आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे... परंतु मै तो अपने घराने समेत प्रभु की ही सेवा नित करूँगा।'' - यहोशू २४:१५

अब जब आप परमेश्वर के साथ अपना नया जीवन व्यतीत कर रहे हो, तो आपको नित आत्मिक शिक्षा - मार्गदर्शन की जरूरत है। परमेश्वर का वचन आके आत्मिक उन्नति के लिए जरूरी आत्मिक भोजन है।

प्रियों, यूहन्ना ८:३१-३२ हमें बताता है, ''... यदि तुम मेरे वचन में रहोगे तो तुम मेरे सच्चे शिष्य ठहरोगे। तब तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।''

मैं आपको उत्तेजित करती हूँ की, आप परमेश्वर के वचन को अपने दिस कि गहराइयों में रख ले, और फिर २ कुरिन्थियों ३:१८ के समान, आप वचन में देखेंगे, आप यीशु मसीही के रुप में बदल जाएंगे।

प्रेम के साथ,

जॉयस

लेखक का परिचय

जॉयस मायर १९७६ से परमेश्वर का वचन सिखा रही है, और १९८० से वह पूर्णकाल सेवकाई में है। वह ५४ से भी अधिक, आत्मिक रीती से उत्तेजित करने वाले किताबों की सर्वाधिक बिक्री करने वाली लेखिका है। जिसमें, अपेक्षित जीवन जीने का रहस्य, प्रार्थना में विश्वास करने का आनंद, और मस्तिष्क की युद्धभूमि यह किताबें शामिल है। साथ ही २२० ऑडीओ कॅसेट्स और ९० से अधिक व्हिडीओ सी.डी. उनके नाम पर है। लाईफ इन द वर्ल्ड यह जॉयस का कार्यक्रम पुरी दुनिया में टि.व्ही. और रेडीओ द्वारा प्रसारित होता है। और वह ''लाईफ इन द वर्ल्ड'' इस सभाओं के लिए काफी यात्रा करती है। जॉयस और उनके पती डेव्ह चार बच्चों के माता - पिता है, और वे सेंट ल्युईस, मिस्सौरी यहाँ पे रहते है।